अहिंसा के सिद्धांत

'अहिंसा' का शाब्दिक अर्थ किसी को दुःख नहीं देना या किसी की हत्या नहीं करना है। महावीर, महात्मा बुद्ध और मनु ने अहिंसा शब्द का प्रयोग इसी अर्थ में किया है। जैनियों के द्वारा किसी भी रूप में हत्या करने या चोट पहुँचाने को हिंसा समझा जाने लगा। उनके अनुसार दूसरे की हत्या करने या चोट पहुँचाने के बारे में सोचना, विचार करना या कहना भी हिंसा है। यदि कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में दूसरों को मारने या चोट पहुँचाने में सहयोगी होता है तो वह भी हिंसा करता है। अहिंसा, एक श्रेष्ठ सद्गुण है। जैनियों के अनुसार, सभी परिस्थितियों में हत्या करना तथा चोट पहुँचाना पाप एवं अशुभ है। लेकिन मनु ने, जिन्होंने हिन्दुओं के जीवन के लिए नियम बनाये, अहिंसा को नमनशील एवं लचीला सिद्धान्त बनाया। उन्होंने बलि और भोजन के लिए पशुओं की हत्या करने की भी अनुमति दी। उन्होंने आत्मरक्षा के लिए भी हत्या करने की अनुमति दी। मनु ने विचार किया कि अहिंसा का व्यवहार जनसाधारण के द्वारा नहीं किया जा सकता है और इसीलिये उन्होंने उनके लिए यह छूट प्रदान किया है।

महात्मा गाँधी मध्यम मार्ग का अनुसरण करते हैं। वह माँस खाने या धार्मिक अनुष्ठानों के लिए पशुओं को मारने की मनु की उदारता को अस्वीकार करते हैं। इन विषयों में वह जैनियों की कठोरता को अपनाते हैं। वह हिन्दुओं की अपेक्षा जैनियों के अधिक समीप है। लेकिन वह जैनियों के उस सिद्धान्त को अस्वीकार करते हैं कि सभी परिस्थितियों में हत्या निन्दनीय है। कभी-कभी हत्या करना एक कर्त्तव्य हो जाता है। व्यक्ति मच्छरों तथा विनाशकारी जीवों को मारने के लिए रोग नाशक औषधियों का प्रयोग कर

Scanned by TapScanner

सकता है आत्म-रक्षा के लिए .खतरनाक जंगली पशुओं को मारना एक कर्त्तव्य है। जीवित रहने के लिए हमें उनको मारना पड़ता है, तथा ऐसे कार्य में हम हिंसा नहीं करते हैं। कभी-कभी मनुष्य की हत्या का भी आदेश दिया जा सकता है। उदाहरणतः, मान लीजिए, एक मनुष्य पागल हो जाता है, तथा अपने हाथ में एक तलवार लेकर सभी दिशाओं में मनुष्यों की हत्या करने या चोट पहुँचाने के लिए दौड़ता है और कोई व्यक्ति उसे जीवित पकड़ने में समर्थ नहीं है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "कोई भी व्यक्ति जो इस उन्मादी पागल का वध कर देता है, वह समुदाय की कृतज्ञता अर्जित करेगा, और परोपकारी मनुष्य समझा जाएगा।"[1]

अहिंसा का अर्थ सिर्फ़ हत्या करना ही नहीं है। गाँधी जी के विचार में इसका व्यापक अर्थ है। विचार, वाणी तथा कर्म में अहिंसा अप्रकाशित होती है। अहिंसा, प्रेम, समाज सेवा, त्याग तथा निर्भयता में अभिव्यक्त होती है। "किसी जीवित प्राणी को आघात नहीं पहुँचाना, निस्सन्देह अहिंसा का मुख्य सिद्धान्त है। किन्तु वह उसकी न्यूनतम अभिव्यक्ति है। अहिंसा के सिद्धान्त का उल्लंघन प्रत्येक अशुभ विचार, अनावश्यक शीघ्रता, असत्य बोलना, घृणा करना, किसी व्यक्ति के अनिष्ट की इच्छा से होता है। संसार को जिस वस्तु की जरूरत है उसे हमारे द्वारा अधिकार में रखने से भी अहिंसा का अतिक्रमण होता है।"[2]

अहिंसा कायरता नहीं है

अहिंसा कायरता नहीं है। इसकी प्रवृत्ति सर्वदा युद्धरत रहने की है। यह बुराई से लड़ने का शक्तिशाली अस्त्र है। इसको विधि शत्रु का विरोध, उस पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न एवं उसे रूपान्तरित कर देने की विधि है। अहिंसक, सक्षम और निर्भय व्यक्ति होता है जो पवित्र उद्देश्य के लिए अपना जीवन अर्पित करने के लिए तत्पर रहता है। कायर के लिए अहिंसा का पालन करना असंभव है, क्योंकि वह अपना जीवन बलिदान करने को कभी तैयार नहीं होता है। जो मरने से डरता है, वह सच्चे अर्थ में कभी भी अहिंसक नहीं हो सकता है। कायर कभी युद्ध नहीं करता है। वह सदैव बुराई के समक्ष अपने को समर्पण कर देता है या भय

---

१. यंग इंडिया, ४ नवम्बर, १९२६, पृष्ट-३८५.

के कारण उस स्थिति से दूर भाग जाता है। वह अप्रतिष्ठा तथा पराजय सहन करता है तथा बुराई के प्रतिफलित होने में सहायक होता है। महात्मा गाँधी का कथन है, "अहिंसा, मेरे सिद्धान्त में अतिशय सक्रिय शक्ति है। इसमें कायरता या दुर्बलता के लिए कोई स्थान नहीं है। कोई हिंसक व्यक्ति किसी दिन अहिंसक हो जा सकता है लेकिन कोई कायर, अहिंसक नहीं हो सकता है। अतएव, इन पृष्ठों में मैंने एक से अधिक बार कहा है कि यदि हम नहीं जानते हैं कि किस प्रकार कष्ट सहन की शक्ति अर्थात् अहिंसा के द्वारा अपनी, अपनी महिलाओं, और अपने उपासनागृहों की रक्षा करें तो हमें कम से कम युद्ध के द्वारा उन सभी की रक्षा करने में अवश्य समर्थ होना चाहिए।"[1]

अहिंसक, कार्यकर्ता शत्रु के अहितकर कार्यों का प्रतिरोध करना छोड़ देता है। वह अपने ऊपर किये गये हिंसक यातनाओं को भी सहन करता है। लेकिन वह शक्तिशाली रूप से अनैतिक कार्यों का विरोध करता है। वह युद्ध करता है और बुराई का विरोध करता है, लेकिन वह कभी भी बदला लेने की भावना नहीं रखता है। वह दुष्ट कार्य करने वाले से प्रेम करता है, लेकिन वह उसके अहितकर कार्यों का विरोध करता है। "अहिंसा, दुष्टता के विरूद्ध युद्ध का त्याग नहीं है। इसके विपरीत, मेरे विचार से अहिंसा, दुष्टता के विरूद्ध अधिक सक्रिय एवं यथार्थ युद्ध है जो बदला लेने की भावना से प्रेरित नहीं है जिसका स्वभाव ही दुष्टता की वृद्धि करना है।" लेकिन अहिंसा के द्वारा किया गया विरोध नैतिक तथा धार्मिक होता है। वह अत्याचारी के विरूद्ध अपनी आत्मा की सम्पूर्ण शक्ति लगा देता है। वह बुराई के विरूद्ध अरक्षित स्थिति में रह कर तथा विरोधी के सभी क्रूरताओं को सहन करते हुए तब तक उसका प्रतिरोध करता है, जब तक विरोधी अपनी आखें नहीं खोलता है, अपनी गलतियों तथा निन्द्य कार्यों को नहीं देखता है, तथा सही मार्ग पर चलने का निश्चय नहीं करता है। अहिंसा का अनुयायी तब तक कष्ट सहन करता है, जब तक कि दुष्ट कर्म करने वाला अपनी गलतियों को अनुभव नहीं करता है तथा अपने व्यवहार को परिवर्तित नहीं करता है। वह प्रेम तथा कष्ट सहन के द्वारा बुराई का विरोध करता है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "मैं अनैतिकता के विरोध में मानसिक और नैतिक युद्ध करने का सोचता

---

[1] यंग इंडिया, १६ जून, १९२७, पृष्ठ-१९६.

Scanned by TapScanner

हूँ। मैं अत्याचारी की तलवार की धार को, उसके विरूद्ध अधिक तेज धार वाले शस्त्र को नियोजित करके नहीं, अपितु उसकी इस आशा को, कि मैं शारीरिक प्रतिरोध करूँगा, विफल करने की पूर्ण चेष्टा करता हूँ। आत्मा का यह प्रतिरोध जो मैं प्रस्तुत करूँगा वह उसे भ्रमित कर देगा। मैं सर्वप्रथम उसे स्तब्ध कर दूँगा, और अन्त में उसे स्वीकार करने को बाध्य करूँगा, जो स्वीकृति उसका अपमान नहीं करेगी, अपितु उसे ऊँचा उठायेगी।”[1]

अहिंसा का अनुयायी अपने शत्रु को स्नेहपूर्ण, अहिंसक और परोपकारी बनने के लिए प्रेरित करता है। उसका लक्ष्य प्रतिशोध लेना नहीं, अपितु निन्दित कर्म करने वाले को नैतिक व्यक्ति में रूपान्तरित करना है। वह बुराई का विरोध करता है और बुरे कर्म करने वाले की सभी बुराइयों को सामने रख देता है। वह ग़लती करने वाले को लज्जित करना या पीड़ित करना नहीं चाहता है। उसका मुख्य उद्देश्य विरोधी को उत्पीड़ित करना नहीं, अपितु उसे रूपान्तरित करना है। स्वयं कष्ट सहन करके तथा अपने चरित्र की पवित्रता के द्वारा अहिंसक कार्यकर्ता अन्याय के विरोध में दृढ़तापूर्वक लगा रहता है तथा पवित्र उद्देश्य की प्राप्ति की ओर तेज़ी से प्रगति करता है।

अहिंसक कार्यकर्ता का आवश्यक गुण, उसकी निर्भयता है। मरने के लिए तत्पर मनुष्य पूर्णतः निर्भय होता है, जबकि अस्त्र-शस्त्रों से पूर्णरूप सुसज्जित व्यक्ति भी कायर हो सकता है। हथियार कायरता का प्रतीक है। अहिंसा के उपासक की मौलिक विशेषता पूर्ण निर्भयता है क्योंकि वह सदैव ख़तरे में रहता है, सदैव कष्ट सहन करता रहता है, फिर भी ग़लती करने वाले से अनवरत रूप से वह प्रेम करता रहता है। “अहिंसा और कायरता कभी एक साथ नहीं रहते हैं। मैं एक सशस्त्र व्यक्ति को भी हृदय से कायर होने की कल्पना कर सकता हूँ। हथियार रखना, यदि कायता का नहीं, तो भय का सूचक है। किन्तु बिना सच्ची निर्भीकता के सच्ची अहिंसा सम्भव नहीं है।”[2]

बलिदान की क्षमता, अहिंसक व्यक्ति में निर्भयता का विकास करती है। वह सदैव अपना जीवन, धन, प्रियजन और प्रत्येक वस्तु को बलिदान करने के लिए तत्पर रहता है। इसलिए, वह भय से पूर्णतः मुक्त रहता है।

---

१. यंग इंडिया, ८ अक्टबर, १९२५, पृष्ठ-३४६.

Scanned by TapScanner

अहिंसा के संवर्धन के लिए स्वयं कष्ट-सहन तथा बलिदान के अभ्यास की ज़रूरत होती है। जो व्यक्ति या राष्ट्र कष्ट सहन नहीं करता है, वह अपने में अहिंसा के नीति को संवर्धित नहीं कर सकता है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "मैंने देखा कि व्यक्तियों की तरह राष्ट्र का भी सलीब की वेदना के अतिरिक्त अन्य दूसरे प्रकार से निर्माण नहीं हो सका। आनन्द का आविर्भाव दूसरों को कष्ट देने से नहीं अपितु स्वयं स्वेच्छा पूर्वक कष्ट सहन करने से होता है।"[1]

अहिंसा के लिए प्रशिक्षण, अनुशासन और समर्पण

अहिंसा की मानसिक स्थिति को प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को शरीर, जीवन तथा मानस के संयम की आवश्यकता है। उसे अपने क्रोध, मोह और घृणा पर पूर्ण नियंत्रण की ज़रूरत है। व्यक्ति प्रेम, अहिंसा, ब्रह्मचर्य अनासक्ति और आध्यात्मिक नियमों का अनुसरण करता है। वह घृणा, कामवासना, आसक्ति और मोह का दमन करता है। जिस व्यक्ति को अपने निम्नतर स्वार्थ पर पूर्ण संयम एवं नियंत्रण रहता है, वह किसी अन्तर्द्वन्द्व का अनुभव नहीं करता है। अनवरत प्रशिक्षण के बाद व्यक्ति अपने शरीर, वचन और चिन्तन पर पूर्ण नियंत्रण करता है। महात्मा गाँधी लिखते हैं, "अहिंसा की मानसिक स्थिति को प्राप्त करने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता है। दैनिक जीवन में मानसिक और नैतिक शिक्षण के क्रम को अपनाना है, यद्यपि वह उसे पसन्द नहीं भी कर सकता है।"[2]

अहिंसा के लिए शरीर और मन के सुसंस्कृत होने की ज़रूरत है। अहिंसा के लिए मन के सहयोग की आवश्यकता है, जिसके बिना हमारी सभी बाह्य क्रियाएँ एक स्वांग मात्र रह जायेंगी। जो व्यक्ति अहिंसक है, किन्तु अपने मन में घृणा एवं दुर्भावना को आश्रय देता है, वह अहिंसक होने का बहाना करता है। "अहिंसा के लिए मानसिक तत्परता एवं संयम की ज़रूरत है। मन के सहयोग के बिना शरीर की अहिंसा दुर्बलों या कायरों की अहिंसा है और इसलिए वह प्रभावकारी नहीं होता है।"[3]

अहिंसा के लिए सत्य या ईश्वर को शरीर, जीवन और अहं का समर्पण अपेक्षित है। इसके लिए व्यक्ति को आध्यात्मिक संयम की आवश्यकता होती है। अहिंसक के लिए सभी सांसारिक वैभव एवं आसक्ति का त्याग करने की प्रवृत्ति ही नहीं, अपितु सत्य के लिए अपना जीवन अर्पण करने की तत्परता भी आवश्यक है। वह अमर आत्मा के आदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत करता है। वह इस अनित्य शरीर के विनाश के लिए बिल्कुल चिन्ता नहीं करता है। वह ईश्वर पर अवलम्बित रहता है तथा संसार की किसी सम्पदा की अपेक्षा सत्य को अधिक मूल्यवांन् समझता है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "जो ईश्वर पर आश्रित रहता है, उसे आत्मा की एक झलक प्राप्त करना चाहिए जो शरीर से श्रेष्ठतर है। जिस क्षण व्यक्ति अविनाशी आत्मा की झलक प्राप्त कर लेता है, उस क्षण से वह नश्वर शरीर के प्रेम का परित्याग कर देता है।"[1]

अहिंसा का प्रशिक्षण हिंसा के प्रशिक्षण से पूर्णतया भिन्न है। अहिंसा के प्रशिक्षण के लिए मनुष्य को धार्मिक तथा नैतिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, हिंसा का प्रशिक्षण भौतिक वस्तुओं की सुरक्षा एवं हमारी पशु प्रवृत्तियों की सन्तुष्टि के लिए होती है। "इस तरह अहिंसा का प्रशिक्षण हिंसा के प्रशिक्षण से पूर्णतया विपरीत है। हिंसा बाह्य वस्तुओं की सुरक्षा के लिए आवश्यक है, अहिंसा आत्मा की रक्षा के लिए ज़रूरी है।"[1] वह कहते हैं, "जिस प्रकार हिंसा के प्रशिक्षण में व्यक्ति को हत्या करने की कला अवश्य सीखना चाहिए उसी प्रकार अहिंसा के प्रशिक्षण में उसे मरने की कला अवश्य सीखना चाहिए। हिंसा का तात्पर्य भय से मुक्ति नहीं है, अपितु भय के कारण का अनुसन्धान करना है एवं उसका प्रतिरोध करना है। दूसरी ओर, अहिंसा में भय का कोई कारण नहीं रहता है।"[2]

अहिंसा सभी मानवीय कार्यों में प्रयोज्य है

अहिंसा व्यक्ति को जीवन की विधि और मार्ग बतलाता है जिसका अनुसरण शान्ति, युद्ध, आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समान रूप से किया जा सकता है। यह सिर्फ उन साधुओं तथा सन्तों के लिए नहीं है जो जंगलों में त्यागमय जीवन व्यतीत करते हैं, बल्कि

सम्पूर्ण मानव-समुदाय के लिए है। अहिंसा सिर्फ़ कुछ लोगों का एकांतिक गुण नहीं है, अपितु यह हमारे सभी क्रिया-कलापों में पालन किया जाने वाला मानवीय मूल्य है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "मैं कोई स्वप्नदर्शी व्यक्ति नहीं हूँ। मैं व्यावहारिक आदर्शवादी व्यक्ति हूँ। अहिंसा का धर्म सिर्फ़ ऋषियों तथा सन्तों के लिए नहीं है। यह सामान्य लोगों के लिए भी है। हिंसा नृशंस मनुष्य का कानून है। क्रूर व्यक्तियों में आत्मा सुषुप्त पड़ा रहता है तथा वह शारीरिक शक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई नियम नहीं जानता है। मनुष्य की गरिमा के लिए उच्चतर नियम के प्रति और आत्मा की सामर्थ्य के प्रति आज्ञाकारिता अपेक्षित है।"[1] ✓

सत्य और अहिंसा का पालन प्रतिदिन के आचरण, राज्य के नियम, और राजनीति में किया जाना आवश्यक है। यह सोचना ग़लत है कि धार्मिक तथा नैतिक मूल्यों का राजनीति, राज्य के कार्यों और सांसारिक समस्याओं से प्रयोजन नहीं है। वह कहते हैं, "कुछ मित्रों ने मुझे कहा है कि सत्य और अहिंसा का राजनीति एवं सांसारिक प्रयोजनों में कोई स्थान नहीं है। मैं इसे स्वीकार नहीं करता हूँ। वैयक्तिक मोक्ष के साधन के रूप में उनका मेरे लिए कोई उपयोग नहीं है। प्रतिदिन के जीवन में उनका प्रस्तुतीकरण और विनियोग निरन्तर मेरे प्रयोग का विषय रहा है।"[2] सत्य और अहिंसा का अनुसरण, वर्गों, समुदायों और राष्ट्रों के द्वारा किया जाना चाहिए। महात्मा गाँधी एक महान् सामाजिक कार्यकर्त्ता थे। उनके अनुसार काल्पनिक सत्य का कोई मूल्य नहीं है। यदि कोई सिद्धान्त दैनिक जीवन में प्रयुक्त नहीं हो सकता है, तो उसका अनिवार्यतः परित्याग कर देना चाहिए। वह कहते हैं, "हमें सत्य और अहिंसा को व्यक्तिगत् आचरण के सिद्धान्त नहीं, अपितु वर्गों, समुदायों एवं राष्ट्रों के आचरण के सिद्धान्त बनाता है। किसी भी मूल्य पर यह मेरा स्वप्न है। मैं इसे प्राप्त करने के लिए जीवित रहूँगा या मर जाऊँगा ... ... अहिंसा आत्मा का गुण है, इसका प्रतिदिन जीवन के सभी कार्यों में अनुसरण किया जाना चाहिए। यदि सभी विभागों में

---

१. महात्मा गाँधी एसेज् ऐन्ड रिफ्लेक्शन्स, सर्वपल्ली राधाकृष्णन् के द्वारा

इसका अनुशीलन नहीं किया जा सकता है, तो इसका कोई व्यावहारिक मूल्य नहीं है।"[1]

अहिंसा हमें जीवन का मार्ग बतलाता है। वह हमें प्रेम का धर्म प्रदान करता है। प्रतिदिन के क्रिया कलापों एवं सम्बन्धों में प्रेम की अभिव्यक्ति, अन्य मनुष्यों के लिए आदर्श का काम करता है। वह आवश्यक है कि त्यागपूर्ण जीवन बिताने वाले धार्मिक मनुष्य, राजनीति में हिस्सा लें तथा मानव की सक्रिय रूप से सेवा करें। धर्म, अपने सभी रूपों में मानवीय क्रिया-कलापों में सन्निहित है। प्रत्येक व्यक्ति को मानवजाति की बुराइयाँ, जैसे, गुलामी, दरिद्रता, अस्पृश्यता के निवारण के लिए सामूहिक कार्यों में भाग लेना आवश्यक है। मानव के पुनरूद्धार तथा उन्नति के लिए राजनीति में प्रवेश करना व्यक्ति का कर्त्तव्य है। अहिंसा तथा सत्य पर आधारित राजनीतिक कार्य तत्त्वतः धार्मिक हैं। महात्मा गाँधी लिखते हैं, "मेरा उद्देश्य शुद्ध रूप से धार्मिक है ……जब तक मैंने स्वयं को सम्पूर्ण मानव के साथ अभिन्न नहीं समझ लिया, तब तक मैं धार्मिक जीवन व्यतीत नहीं कर सका था; और यह मैं तब तक नहीं कर सकता हूँ जबतक कि मैं राजनीति में सम्मिलित नहीं होता हूँ।"[2] मानव का विकास करने, उसके कष्टों तथा बुराइयों से उसकी रक्षा करने के लिए, व्यक्ति को राजनीति में सम्मिलित होना अपरिहार्य है। पूर्णतया धार्मिक जीवन यापन करने के लिए व्यक्ति को जनता के बीच रहना है, उनकी कठिनाइयों को अनुभव करना है और उनके समुत्थान के लिए अनवरत रूप से प्रयास करना है। यही कारण है कि महात्मा गाँधी ने विचार किया कि परतंत्र, भूखा और पीड़ित देश में, मानव का राजनीति में सम्मिलित होना धार्मिक है, शर्त्त यह है कि वह अहिंसा पर आधारित हो।

अहिंसा से कुकर्मी का रूपान्तर और उसमें आत्म-व्यक्तित्व का विकास

अहिंसा पापी व्यक्ति का रूपान्तर करती है। यह अपने अनुयायी और पापी दोनों को पवित्र करती है। अहिंसा का मुख्य लक्ष्य मानव जाति का रूपान्तर और आध्यात्मीकरण है। अहिंसा का व्यवहार व्यक्ति के अज्ञान,

---

उन्माद, घृणा, ईर्ष्या और स्वार्थ को दूर करती है, और उसमें आत्म-व्यक्तित्व को विकसित करती है। अहिंसा सभी अहं, मोह और स्वार्थ का निराकरण करती है और दैवी आत्मा को पूर्णतः अभिव्यक्त करती है तथा उसके समस्त क्रिया-कलापों को नियंत्रित करती है। अहिंसा से पातकी का आचरण उत्कृष्ट, श्रेष्ठ एवं संवेदन-शील के साँचे में ढल जाता है। वह अपने अन्दर निहित आध्यात्मिक शक्तियों के प्रति अधिक उदार हो जाता है। उसके नेत्र तथा कर्ण, जो अभी तक सत्य के प्रति बन्द थे, अहिंसा के उपासक के कष्ट-सहन और मानव प्रेम से जाग्रत हो जाते हैं। यह सिर्फ़ अहिंसा के उपासक का प्रबल प्रयत्न तथा प्रभाव ही है जो अत्याचारी के अज्ञान, दुष्टता, अहं, घृणा, पूर्वाग्रह और स्वार्थ का उन्मूलन कर देता है। अहिंसक कार्यकर्ता के अतिरिक्त दूसरा कौन है जो कुकर्मी की निद्रालु आत्मा को जाग्रत और अनुप्राणित करता है?

यदि अहिंसा का उपासक पापी के हृदय तथा मन के सर्वाधिक अन्तःस्थ स्थानों में अपना धार्मिक और नैतिक युद्ध आरम्भ नहीं करता है, तो वह कुकर्मी सदैव अत्याचारी और हिंसक ही रह जाता है। प्रेम और अहिंसा के कार्यों के द्वारा वह विरोधी की कामासक्ति, अहं, मोह और स्वार्थ का उन्मूलन कर देता है। आत्मा पातकी के आचरण और मानस पर पूर्ण नियंत्रण रखना आरम्भ कर देता है। अहिंसा के अनुयायी का लक्ष्य सिर्फ़ विरोधी के मन, वचन आचरण को शुद्ध करना ही नहीं, अपितु उसके अन्दर निहित सर्वोत्तम तत्त्वों को प्रकाश में लाना है। वह अपने विरोधी के नैतिक शुद्धीकरण के लिए अनवरत रूप से, प्रेम और साहसपूर्वक कष्ट सहन करता है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "यदि हम अपने मार्ग का अनुसरण करना छोड़ देते हैं, तो हम उसके सर्वोत्तम अंश को प्रबुद्ध नहीं करते हैं। जब हम किसी अशुभ के साथ निपट रहे हैं, तो हमें पापी को असंतुलित करना पड़ सकता है। यदि हम उसके सर्वोत्तम अंश को प्रकाश में लाना चाहते हैं, तो हमें खतरा उठाना पड़ता है।"[1]

अहिंसा का प्रभाव कुकर्मी के मन में अन्तर्निहित नैतिक तत्त्वों, उत्कृष्ट विचारों, आध्यात्मिक भावनाओं और श्रेष्ठ संवेगों की समग्र गति में सन्निहित है। सभी आध्यात्मिक शक्तियाँ व्यक्ति के अन्दर कार्य करना आरम्भ कर

Scanned by TapScanner

देती है। अहिंसा, पापी के मानस का रूपान्तर और उसके स्वार्थ का उन्मूलन करके विजयी होती है। वह अत्याचारी के आत्मा को सार्वभौम, गत्यात्मक और नियामक बना देती है।

अहिंसा मानव जाति की एकता एवं प्रेम पर आधारित है :

आत्मा, ईश्वर से अपनी सत्ता प्राप्त करती है। सभी में एक ही ईश्वरीय आत्मा है जो भातृवत् एकता में आबद्ध हैं। महात्मा गाँधी कहते हैं, "मैं ईश्वर और मानव की पूर्ण एकता में विश्वास करता हूँ। यद्यपि हम सभी व्यक्तियों में अनेक शरीर हैं, किन्तु उससे क्या, हमारी आत्मा एक है।"[1] हम अपनी आन्तरिक सत्ता में एक हैं किन्तु अपने बाह्य आचरण में भिन्न हैं। प्रेम, प्रकृति के कार्यों का सिद्धान्त है। अहिंसा, सार्वभौम प्रेम और एकता पर आधारित है। पापी, द्वेषी, क्रूर तथा अपराधी में भी वही ईश्वरीय आत्मा और एकता है। वे भी प्रेम के प्यासे हैं। जिस चरित्र का उन्होंने निर्माण किया है, वह समाज की बुराइयों के कारण है। उनका पुनः आध्यात्मिक रूपान्तर किया जा सकता है।

महात्मा गाँधी का विश्वास है कि मनुष्य इन्द्रियों की इच्छाओं से आच्छादित है, और इसीलिए, वह अपूर्ण है। वह अभी अपूर्ण हैं। यही कारण है कि हिंसा के आवेशों की ओर हम सभी उन्मुख रहते हैं, यद्यपि अहिंसा और प्रेम, मानव संसार को शासित करते हैं। सच्चा धर्म सतत् उदार व्यवहार के द्वारा शत्रुओं में प्रेम का संवर्धन करने में सन्निहित है। जो हमसे घृणा करते हैं, उनसे प्रेम करना धर्म का विशुद्धतम रूप है।

अहिंसा, घृणा के विरूद्ध प्रेम की रीति है। यदि व्यक्ति उनको प्यार करता है, जो उससे स्नेह करते हैं, तो उसका कार्य मानवीय है। लेकिन यदि वह उनसे प्रेम करता है जो उससे घृणा करते हैं, तो उसका कार्य यथार्थतः आध्यात्मिक है। घृणा और हिंसा एक साथ रहते हैं, वे दोनों अधार्मिक हैं। जब हम अपने विरोधी से प्रेम करते हैं, तब हम वस्तुतः अहिंसा के उपासक हैं। अहिंसा का मन्त्र हृदय से घृणा की गन्दगी को अपसारित करना और अपने को असीम, सार्वभौम और ईश्वरीय प्रेम में विस्मृत कर देना है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "भावात्मक रूप में अहिंसा का तात्पर्य, व्यापकतम प्रेम, महानतम उदारता है। यदि मैं अहिंसा का अनुयायी हूँ, तो मुझे अपने शत्रु से अवश्य प्रेम करना चाहिए। मुझे उन्हीं नियमों का कुकर्मी के प्रति प्रयोग करना चाहिए, जो

---

[1] हरिजन, ४ सितम्बर १९३४ पृष्ठ-३९८.

Scanned by TapScanner

मेरे शत्रु या मेरे लिए अपरिचित व्यक्ति हैं, जैसा कि मैं अपने कुकर्म करने वाले पिता या पुत्र के प्रति करता हूँ।"[1]

अहिंसा के लिए ईश्वर में पूर्ण निष्ठा अपेक्षित

अहिंसा के प्रति समर्पण के लिए ईश्वर में जीवन्त निष्ठा आवश्यक है। ईश्वर में अचल विश्वास के बिना अहिंसा के आदर्शों पर चलना कठिन है। इसके अनुयायी को मुक्तिदाता, नियंत्रक और शासक के रूप में ईश्वर पर पूर्ण आस्था अवश्य रहना चाहिए। अहिंसक सोचता है कि ईश्वर सदैव उसकी रक्षा करता है उससे प्रेम करता है और उसके उद्धार के लिए आता है। वह कभी भी निराश नहीं होता है। सभी धर्मनिष्ठ युद्धों में ईश्वर स्वयं ही योजना बनाता और युद्ध का संचालन करता है, इस पर अहिंसक का पूर्ण विश्वास होता है। महात्मा गाँधी कहते हैं, "एक न्यायपूर्ण संघर्ष में, ईश्वर स्वयं योजना बनाता, आन्दोलन में भाग लेता और युद्धों का संचालन करता है। धर्मयुद्ध का आरम्भ सिर्फ़ ईश्वर के नाम पर ही किया जा सकता है, और जब सत्याग्रही स्वयं को पूर्ण असहाय अनुभव करता है, प्रकट रूप से मृत्यु के समीप रहता है, और अपने सभी ओर पूर्ण अन्धकार देखता है, सिर्फ़ तभी ईश्वर उसके परित्राण के लिए आता है। अहिंसा के उपासक को विश्वास रहता है कि ईश्वर अग्निमय कठिन परीक्षा के द्वारा उसे कसौटी पर जाँच रहा है और उसमें आनन्दित हो रहा है, परन्तु अंधकार एवं निराशा के क्षणों में वह उसकी सहायता के लिए आता है।